चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27-10-23	3	2-5

पर्यावरण संरक्षण से स्वस्थ समाज का निर्माण

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

चौधरी चरण सिंह हकृवि के बेसिक साइंस में आयोजित कांफ्रेंस में उपस्थित लोग। • जागरण

चौधरी चरण सिंह हकृवि के बेसिक साइंस में आयोजित नेशनल कांफ्रेंस में संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज व मंच पर उपस्थित अतिथिगण। जागरण

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है।

खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर स्वस्थ समाज का कर सकते निर्माण हैं। वह विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में संबोधित कर रहे थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आइडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डा. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डा. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा। इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा इत्यादि शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन चिंता का विषय : सुखदेव सिंह :

अध्यक्ष डा. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया

डा. नवीन कुमार जैन ने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना-आईडीपी प्रोजेक्ट को अहम बताया। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत शिक्षक और विद्यार्थी लघु कोर्स और प्रशिक्षण लेने के लिए विदेशों के उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफारिशें कुछ स्वीकृतियां निकलकर आएंगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डा. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया, जबकि डा. जतेश काटपालिया ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस कार्यशाला में मंच का संचालन डा. रश्मि त्यागी ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	27-10-23	2	1-4

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनानी होगी

एचएयू में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि बोले वीसी प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। देश का एक बड़ा हिस्सा गांवों में बसता है और कृषि पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनाने की जरूरत है।

यह कहना है कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज का। वे बीरवार को विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी) आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. कांबोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा। इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डाल रहा है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों को अपनाना होगा। बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

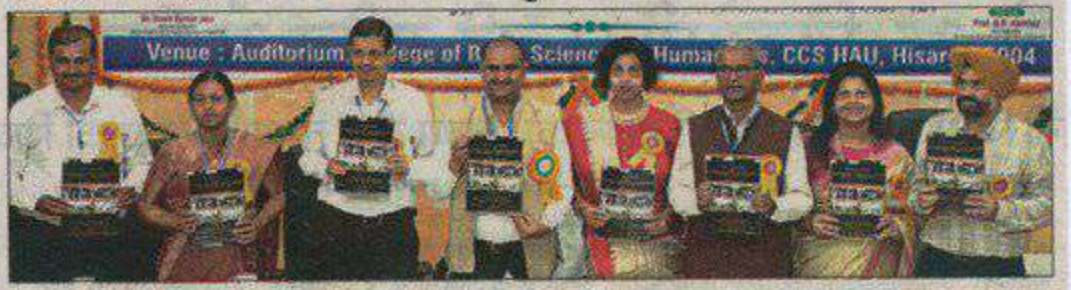

एचएयू में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान पुस्तक का विमोचन करते अतिथिगण। स्रोत : संस्थान

युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने की जरूरत : डॉ. नवीन

विशिष्ट अतिथि एनएएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने की बात कही। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्य अतिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। इस मौके पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमा, डॉ. जतेश काठपालिया, डॉ. रश्मि त्यागी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	27-10-23	10	3-6

जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा : वीसी

किसानों की आजीविका में सुधार कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हिसार। पुस्तक का विमोचन करते हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य। फोटो : हरिभूमि

देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन चिंता का विषय : डॉ. सिंह

मुख्य वक्ता एनडब्लयूआईएसए के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां है।

पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

पुस्तक का किया विमोचन

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफारिशें कृषि रणनीतियां निकलकर आएगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. मीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया, जबकि डॉ. जतेश काठपालिया ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस कार्यशाला में मंच का संचालन डॉ. रश्मि त्यागी ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27-10-23	2	5-8

भास्कर खास • हकृवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का वीसी ने किया शुभारंभ

खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण से स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह विचार एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि के रूप में व्यक्त किए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन रहे। मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने शिरकत की। मुख्यअतिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने समाजशास्त्र व कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों से आह्वान किया कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल किया जाए ताकि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों व उनसे पैदा हो रहीं चुनौतियों से निपटा जा सके।

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन करते हुए।

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना। उन्होंने बताया जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। विशिष्ट अतिथि एनएएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी) आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. रश्मि त्यागी ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	27-10-23	5	1-4

किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 अक्तूबर (विरेन्द्र वर्मा): देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कैम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन करते हुए प्रो. काम्बोज व अन्य।

जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हम एक ऐसा भविष्य बनाए जहां हम प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व रखें, जहां कोई भी पीछे न छूटे और जहां समृद्धि की कोई सीमा न हो। हमें अपने पर्यावरण के प्रति चेतना और करूणा पैदा करनी चाहिए। मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। विशिष्ट अतिथि एनएएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए इस योजना को अहम बताया। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफारिशें कुछ स्वीकृतियां निकलकर आएगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	27-10-23	4	1-6

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनाने का आह्वान

हकृवि के राष्ट्रीय सम्मेलन में की जाएंगी कई कृषि क्षेत्र को लेकर सिफारिशें, जलवायु परिवर्तन से निपटना है तो करना होगा नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल : प्रो.काम्बोज

हिसार, 26 अक्तूबर (रा0टी): जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल है। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है।

इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एन.ए.एच.ई.पी.)-आई.डी.पी. प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे।

इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एन.ए.एच.ई.पी.-आई.डी.पी. प्रोजैक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। इस 2 दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफारिशें व कुछ स्वीकृतियां निकलकर आएगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे।

समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने 2 दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस कार्यशाला में मंच का संचालन डॉ. रश्मि त्यागी ने किया।

प्रो. काम्बोज ने उपस्थित समाजशास्त्र व कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों से आह्वान किया कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल किया जाए, ताकि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों व उनसे पैदा हो रही चुनौतियों से निपटा जा सके। इसमें समाजशास्त्र क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक व कृषि वैज्ञानिक अहम भूमिका अदा कर न केवल पॉलिसी प्लानर, बल्कि कृषकों व आम जनता को कृषि क्षेत्र से जुड़े नवाचारों, प्रौद्योगिकियों से अवगत करवा सकते है।

हकृवि में आयोजित 2 दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान मंच पर मौजूद मुख्यातिथि एवं (दाएं) उपस्थित शिक्षाविद, वैज्ञानिक व विद्यार्थी।

2 मुख्य चुनौतियों से निपटना होगा : डा. सुखदेव

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने 2 मुख्य चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी मुहिम को अपनाना होगा।

ज्वलंत विषयों पर चर्चा कर हल निकाला जाएगा: डा.नवीन

विशिष्ट अतिथि डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उन्होंने बताया कि आज के सम्मेलन का विषय बहुत महत्वपूर्ण है, जिसमें समाज से जुड़े ज्वलंत विषयों पर चर्चा कर हल निकाला जाएगा। सामाजिक समस्याएं जैसे पर्यावरण परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों का निवारण करने के लिए बाहर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के साथ हमें एकजुट होकर काम करना होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	27-10-23	5	4-5

हकृवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

जलवायु परिवर्तन ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं : काम्बोज

हिसार, 26 अक्तूबर (हप्र)

जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	27.10.2023	--	--

किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हकृवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

हिसार। देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नही रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	26.10.2023	--	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरु

किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 26 अक्टूबर। देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाज शास्त्रीय संघ (एन डब्लयू आई एसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बदलाव कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हम एक ऐसा भविष्य बनाए जहां हम प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व रखें, जहां कोई भी पीछे न छूटे और जहां समृद्धि की कोई सीमा न हो। हमें अपने पर्यावरण के प्रति चेतना और करुणा पैदा करनी चाहिए। लोगों को प्रेरित करना चाहिए और स्थायी विकास के लिए नवाचारों का निर्माण करना चाहिए। मुख्यातिथि ने उपस्थित समाजशास्त्र व कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों से आह्वान किया कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल किया जाए ताकि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों व उनसे पैदा हो रही चुनौतियों से निपटा जा सके। इसमें समाजशास्त्र क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक व कृषि वैज्ञानिक अहम भूमिका अदा कर न केवल पॉलिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आम जनता को कृषि क्षेत्र से जुड़े नवाचारों, प्रौद्योगिकियों से अवगत करवा सकते हैं। मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एन डब्लयू आई एसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी मुहिम को अपनाना होगा। विशिष्ट अतिथि एन एएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एन ए एचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए इस योजना को अहम बताया। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत शिक्षक और विद्यार्थी लघु कोर्स और प्रशिक्षण लेने के लिए विदेशों के उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आज के सम्मेलन का विषय बहुत महत्वपूर्ण है, जिसमें समाज से जुड़े ज्वलंत विषयों पर चर्चा कर हल निकाला जाएगा। सामाजिक समस्याएं जैसे पर्यावरण परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों का निवारण करने के लिए बाहर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के साथ हमें एकजुट होकर काम करना होगा। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफारिशें कुछ स्वीकृतियां निकलकर आएगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया, जबकि डॉ. जतेश काठपालिया ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस कार्यशाला में मंच का संचालन डॉ. रश्मि त्यागी ने किया।

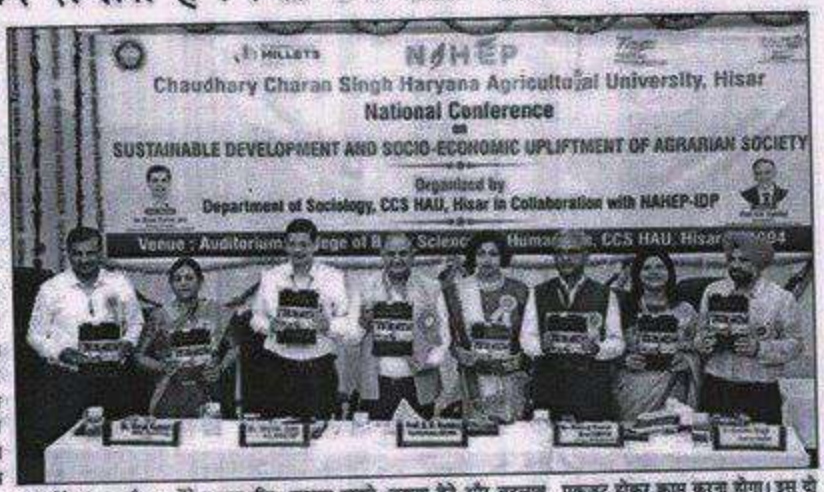

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	26.10.2023	--	--

किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार (चिराग टाइम्स) हिसार: देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. प्रवीण कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब सैद्धांतिक आशंका तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असामान्य तापमान का असर कृषि उत्पादन पर प्रभाव

डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि गर्मी तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हम एक ऐसा भविष्य बनाएं जहां हम प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व रखें, जहां कोई भी पीछे न छूटे और जहां समृद्धि की कोई सीमा न हो। हमें अपने पर्यावरण के प्रति चेतना और करुणा पैदा करनी चाहिए। लोगों को प्रेरित करना चाहिए और स्थायी विकास के लिए नवाचारों का निर्माण करना चाहिए। मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यान्नों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम समय में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व योजनाओं के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर व्यवहारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए काम करने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी भूमिका को अपनाना होगा। विशिष्ट अतिथि एनएएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. प्रवीण कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च कृषि शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और व्यवहार्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए इस योजना को अहम बताया। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत शिक्षक और विद्यार्थी लघु कोर्स और प्रशिक्षण लेने के लिए विदेशों के उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आज के

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	26.10.2023	--	--

किसानों की आजीविका में सुधार व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन करते हुए।

राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्लयूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

विशिष्ट अतिथि एनएएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी।